

निनियाँ

कल्पना झा

निनियाँ

(बालगीत)

कल्पना झा


TANEESHA
PUBLISHERS

Udham Singh Nagar, Uttarakhand

Book : Niniyan
Author : Kalpana Jha
Edition : 1st (October, 2021)
ISBN : 978-9390910076
MRP : ₹ 175/-

Published by



TANEESHA PUBLISHERS

A unit of- **PRACHI DIGITAL PUBLICATION**

Gaytri Vihar, Phase- 1, Jawahar Nagar,
Udham Singh Nagar-263149, Uttarakhand,
E-mail : editor@taneeshapublishers.in
Contact : +91 8454812712, 9760418103

Printed by : Thomson Press India Limited, New Delhi-110020

Cover Art : Kundan Kumar Rai

Art in Inside Pages : Mukti Jha, Kundan Kumar Rai

समर्पण

समस्त नेना कैँ समर्पित



शुभाशंसा

वृत्तिसँ शिक्षिका, रुचिसँ लेखिका, संस्कारसँ मिथिलाक सांस्कृतिक विध–व्यवहारक संरक्षिका, पावनि–तिहारक वैज्ञानिक तथ्य आ मान्य परम्पराक जिज्ञासु, श्रीमती कल्पना झा लघुकथा,कथा,कविता, बालकविता/गीत सहित अनुवादकक रूपमे जानल–मानल नाम छथि।

हिनक निनियाँ (नेना लेल मलारि)बालगीत/कविता–संग्रहमे परम्परागत ठेठ शब्दक संग नव तकनीकक शब्दक प्रयोग सेहो समावेश कयल गेल छनि। नेना लोकनिकेँ पोथी पढ़बाक दिस रुचि जगयबाक लेल मनलग्गू,सरल,सहज,बोधगम्य,तुकान्त,गेय, शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक, पथप्रदर्शक गीत सभमे एक दिस नाना–नानीक खिस्सा–पिहानी,गाम–घर,सूप–कोनियाँ, बैलगाड़ी आदि विषयक गीतसँ अपन क्षेत्रक माँटिक सुगन्धसँ परिचित करायब उद्देश्य छनि,तँ दोसर दिस मेट्रो,हवाइ–जहाज,जेट–विमान,आदि नव–नव होइत विकाससँ परिचित करायब सेहो। एक दिस चिट्ठी–पत्रीक इतिहास कहब जरूरी बुझाइत छनि तँ दोसर दिस व्हाट्सएप्प, ट्वीटर, मैसेंजर आ इंटरनेटक जाल बुनि,ओकर

उपयोग सतर्कतासँ करबाक लेल मनोवैज्ञानिक चिकित्सक जकाँ सुझाव सेहो देखबामे अबैत छनि। समग्रतामे हम ई कहब जे गामसँ लय महानगर धरि नेना लोकनिकेँ मातृभाषाक दिस आकर्षित करबाक ई संग्रह कवयित्रीक एक सफल प्रयास छनि।

हिनक ई प्रयास तखने सार्थक मानल जायत,जखन कि भारतक कोन–कोनमे,मैथिलक घरक ड्रॉइंग रूममे हिनक ई किताब राखल जायत,जतय नेनाक ध्यान पड़तैक, ओ पढ़बाक कोशिश करत। हमरा विश्वास अछि, जे कोनो नेना एक बेर पढ़त, तँ ओ बेर–बेर पढ़बाक इच्छा करत आ तखने मैथिलीमे रुचि जगतैक। नेनाक मनोविज्ञानकेँ ध्यान राखि विषय वस्तुक चयन,एहि पुस्तकक विशेषता छैक। ई किताब नेनाक हाथमे दय कय तँ देखियौक, बहुत आनंदसँ पढ़त। नेनाक आनन्द आ ओकर स्वर्णिम भविष्येक लेल तँ हमसभ सभ किछु करैत छी।

हितनाथ झा

प्रो0 हरिमोहन झा जन्मदिवस

18 .09 .2021



भूमिका

खेल नहि बाल-कविता लेखन

बालसाहित्यक लेखन एखन गति पकड़लक अछि। पिछला किछु वर्षसँ एहि दिस लेखक लोकनिक आकर्षण संतोष प्रदान करैत अछि। आब ई नहि कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीमे बालसाहित्य नहि लिखल जा रहल अछि। प्रकाशनक सुविधा आ लेखकक एहि दिस झुकाव, निश्चित रूपसँ बालसाहित्यक भण्डारकँ पुष्ट कयलक अछि। जाहिसँ नि :संदेह ई समृद्ध भेल अछि।

कल्पना झाजी सेहो एहि विधा दिस ध्यान देलनि अछि। हिनक ई ‘निनियाँ’ पोथी तकर प्रमाण थिक। ई लगभग तीन दशक सँ बेसीऐसँ नेना लोकनिक सम्पर्कमे रहलीह अछि। विद्यालयमे शिक्षकक दायित्वसँ ल’ क’ प्रधानाचार्यक प्रशासनिक दायित्वक निर्वहन करैत ई नेनाक एक एक गतिविधि सँ ल’ग सँ परिचित भेलीह अछि। ओकर क्रिया कलाप ओकर दिनचर्या ओकर मनोविज्ञान ओकर व्यवहार, रहन सहन आदि कँ

लग सँ देखलीह अछि। वैह अनुभव हिनका कलम उठयबाक लेल प्रेरित कयने होयतनि। आ तखने ई नेना लोकनिक हेतु लेखन करबाक हेतु उन्मुख भेल होयतीह। तकरे परिणाम थिक जे हिनक बालकविता संग्रह "निनियाँ "अपने सभक हाथमे अछि। निनियाँ बाल मनोविज्ञान पर आधरित उत्तम कोटिक कविता संग्रह थिक। जाहिमे हिनक अनुभव आ नेनाक प्रति लगाव साफ साफ झलकैत अछि। निनियाँ नेनाक सुतेबाक एक कला थिक। नेना सूति रहय ओहि लेल गाओल जाय बला गीत थिक। एहिमे प्राकृतिक चित्रण, नीक संदेश, आँगा बढ़बाक प्रेरणा, नीक संस्कारक ज्ञान आदि समाहित रहैतअछि, से कल्पना जीक उक्त पोथीमे सेहो अपने लोकनि देखबनि। एहि माध्यमसँ कल्पनाजी नेनाक हृदय तलमे उतरबाक सार्थक प्रयास कयलनि अछि। हिनक बाल कविता संग्रह पढ़ैत काल अपने नेनाक जावन्तो क्रियाकलाप सँ परिचित भ सकै छी। ओकर एक एक गतिविधि कैँ एहिमे देखि सकै छी।ओकर मनोविज्ञान, ओकर सोचक सीमा,ओकर दृष्टि, ओकर ज्ञानक सागरमे उतरि सकै छी। ओ की चाहैत अछि, की बनय चाहैत अछि, तकरो झलक अपनेकैँ एहि संग्रहमे देखबामे आओत। संग्रहमे नेनाक विभिन्न मानसिकताक दर्शन अपने देखब। समस्या छै जे नेना नेने लग रहैत अछि, से ओकरा स्कूलेमे भेटैत छै। सेहो एखन बन्द छै। किछु परिस्थिति जन्य,आ किछु वर्तमान महामारीक कारणे ओकरा घरोमे एसगरे रह' पड़ैत छै। तँ ओ करय तँ की करय? बाहर

निकलनाइ बन्द। मैदानमे खेलेनाइ बन्द। एहन स्थितिमे आधुनिक जे यंत्र मोबाइल से ओकर फ्रेंड भ जाइत छै। ओकरे संगे पढैत अछि, ओकरे संग खेलाइत अछि। वैह ओकर एखन सब किछु भ गेल छै। परिस्थितियो ओकरा एही संग रहबाक हेतु लाचार क' देने छै। एहनमे नेना की करय? पढ़ाई सँ ल'क' खेल धरिक एक मात्र साधन इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र भ गेलैक अछि। ओहिमे ओकरा मिथिलाक माटिक सुगन्ध भेटब मुश्किल भऽ गेलैक अछि। एहि बात कैँ कल्पनाजी खूब नीक जकाँ बुझलनि अछि आ खूब बिटियाक' पकड़लनि अछि। तकर किछु वानगी हिनक निम्न कविता सबमे देखल जाय...

'व्हाट्सएप मैसेज आयल गे
बौआ कतहु हेरायल गे
इंटरनेटक जाल गे
भेलै बड़ जंजाल गे
कोना कऽ ताकब बौआ कैँ
ककरो किछु ने फुराय गे
पुछियनु गूगल बाबा कैँ
करताह कोनो उपाय गे '।

'अल्ले छू! मल्ले छू!

कोन देश छू

अमेरिका छू

अमेरिका वला केर नाम की

जुकरबर्ग भाइ

आनू बजाए

एप बनबाउ

जाहि सँ

लोरी सुनाउ’

तहिना...

‘बौआ– बुच्ची सुनू अकानि

छोड़ू सभ पुरनका बानि

आब ने खिस्सा कहती नानी

सुनू यै बुच्ची नव पिहानी

नानी, बाबी भेलीह विलीन

माय एलेक्सा अनलन्हि कीनि’

एलेक्सा मौसी आउ ने

खिस्सा नव सुनाउ ने

दुनियाँ नव देखाउ ने

नवका रीति चलाउ ने

बाबी नानी आब ने भेटथि

ताकि हेरि कऽ लाउ ने'

मुदा कतहु कतहु माटिक सुगन्ध सेहो देखबामे हठात आबि जायत। यथा...

'बुच्ची अहाँ छी बड़ खुरलुच्ची

खाय कहाँ छी कटहर बिच्ची

आम अनार ओ बरहर लीच्ची

नीक ने लागय अहाँ कैँ बुच्ची

केरा नारिकेल ओ समतोला

देखि अहाँ छी आगि बबूला'

'फेर सँ नानी पोखैर खुना

पोखरिक भीड़ पर गाछ लगा

बरखा बरिसत झम- झम- झम

बौआ नाचय छम- छम- छम'

तहिना कोरोना पर केन्द्रित सेहो हिनक बालकविता अछि। जाहिमे

ओकर सुरक्षाक उपाय आ दैनिक क्रियाकलापक वर्णन नीक जकाँ नेनाकेँ बुझाओल गेल अछि...

बौआ, नूनू कलमच बैसू
एमहर– ओमहर जनु अहाँ कूदू
दौड़ क जाएब ने आब दोकान
दुष्ट कोरोना पकरत कान
साबुन रगड़ि क माजू हाथ
सेनिटाइजर राखू साथ
व्यर्थ ने कखनो छुबियौ नाक
दुनू आँखिक राखू ध्यान
मूँह झाँपि क पढ़ियौ पाठ
रहू पहिरने सदिखन मास्क'

मायगे सुन्नर बौआ बनबौ
घरसँ बाहर हम नहिं जेबौ
भेलैक समैया बड़ विपरीत
बदलल सभटा दुनियाँक रीति
बड़रे बेगरते बाहर जाएब
पहिने मुँहमे मास्क लगायब '

बौआरे बहलै केहन बसात

आबने कखनो बाहर भाग

दू गज दूरी बनौनहिं राख

मुँहपर मास्क पहिरनहिं बात

सेनिटाइजर राखिहैं साथ

साबुन पानिसँ धौइहैं हाथ

आँखि, नाक नहिं छुबिहैं हठात्

मोन राख नहिं धरिहैं लाथ'

किछु कविता पुस्तकक नामकरण पर केन्द्रित अछि। जाहिमे निनियाँ के प्रधानता देल गेल अछि...

'आ रे कौआ आ घुरि आ

रूसल बौआ भने मना

आब ने नानी कटथुन्ह कान

आनि खोऔथुन्ह मीठ पकवान'

'मिठका- मिठका गीत सुना

निनियाँ के तों आन बजा

सुततै बौआ निन्न सँ

सपना देखतै चेन सँ

मायक ममता बड़ अनमोल

भेटए ने कोनो देने मोल'

किछु उपदेश परक अछि, तँ किछु पथप्रदर्शक। शिक्षाप्रद तँ अछिए...

'इन्द्रधनुष में कोन कोन रंग

बूझू बौआ जुनि करू तंग

बै–नी– आ– ह– पी– ना– ला

खोलू यौ बौआ ताला

बैगनी, नीला, ओ आसमानी

हरियर, पीयर, लाल, नारंगी

सात रंग सँ चमकए दुनियाँ

झुन झुन बाजै छै झुनझुनियाँ'

'गोल गोल छै शून्य रौ बौआ

सूरज चन्ना तारा गोल

माएक माथक टिकुली गोल

गोल गोल छै गोलमगोल

मिठका समतोला छै गोल

समतोले सन दुनियाँ गोल

गाड़ी केर पहिया छै गोल
बौआ खेलथि गेन्दो गोल
थारी गोल छै रोटी गोल
नानी फटकथि सूपो गोल
गोल गोल घूमै छै दुनियाँ
बौआ घुरमै गोलम गोल'

'भोरे भोरे तेजि ओछाओन
करिहैं बौआ प्राणायाम
शिर्षासन, धनुरासन, ध्यान
करिहैं बौआ सर्वविधान'

'माँ गे माँ हम स्कूल जेबै
पढ़ि लीखि हम बाबू बनबै
बाबू बनि हम उड़ब आकाश
चन्ना पर हम करबै वास
चहुँदिशि भेटत शुद्ध आकाश
प्रदूषण केर ओतय ने वास'
'नेना हम अखन अज्ञान

पढ़ि–लिखिकैँ बनब सुजान

श्रेष्ठजनक हम राखब मान

चरण छूबिक’ करब प्रणाम

बिनु आदर नहिं पाएब ज्ञान

कहि गेला अछि चतुर सुजान

सत्यकपथ पर अडिग चलब हम

राखब माए वसुधा केर मान ‘

एहि तरहेँ कहल जा सकैत अछि जे कल्पना झाजीक ई बालसंग्रह निनियाँ नेनाकैँ ठेठ शब्दाबली सँ ल’क ‘ आधुनिक आम जीवनमे प्रचलित शब्दाबलीमे रचल गेल अछि। ग्रामीण आ शहरी नेना दुनू एक दोसर सँ परिचित भ सकैत अछि। उच्चारण करबामे कनी कठिनाह होइतो अधिकांश कविता तुकमे अछि आ सुन्दर शब्द संयोजन सँ अलंकृत अछि। नेना ओकरा खेल खेलमे सीख सकैत अछि। नाचि– गाबि क’ ओकर आनंद उठा सकैत अछि। कल्पना जीक ई पहिल बालकविता संग्रह थिक। जे निश्चित रूपेँ मैथिली जगतमे एक भिन्न कोटिक बालकविताक संग्रहक रूपमे नेना लोकनिक हाथमे आयल अछि। किछु कविता अंग्रेजीक राइम पर आधारित अछि तँ किछु लोकगीत पर। जे कतहु सँ अनसोहाँत नहि बुझाइत अछि। नेनो कैँ ठोर पर सहजे वास भऽ जेतैक से विश्वास अछि।

कल्पना झाजी बाल लेखन दिस प्रेरित भेलीह अछि, से स्वागतेय अछि। ई एहिना अपन लेखन कँ आगू बढ़बैत रहती आ नेनाक लेल एक सँ एक नव रचना गढ़ैत रहती से विश्वास अछि। हिनक लेखनी निरन्तर गतिमान रहौ जाहिसँ आगुओ हमरा लोकनि कँ उत्कृष्ट रचना सभ पढ़बाक लेल भेटैत रहय,आ नेनाक साहित्यिक भण्डार भरैत रहय। एही विश्वासक संग हिनका बहुत बहुत शुभकामना दैत छियनि।

दमन कुमार झा

अनन्त चतुर्दशी

19/9/2021



लेखकीय

"निनियाँ" बालगीतक पोथी लऽ समस्त पाठकवृन्दक समक्ष प्रस्तुत भेलहुँ अछि।

पोथीक मादे तऽ पोथी पढ़लाक बादे कोनो नीक–बेजाय समस्त विद्वजन, आओर प्रिय पाठकवृन्द अपन– अपन विचार व्यक्त करैत समुचित मार्गदर्शन करब। हमतऽ अपना हृदयक उद्‌गारक अंशमात्र व्यक्त करय चाहब।

हँ तऽ कहए लगलहुँ जे–

माता सन हित दोसर नाहि,,,,,

माय अपन बच्चा लेल जीबैत छथि, हँसैत छथि, कनैत छथि,बजैत छथि, गबैत छथि अर्थात पूर्ण रूपेन समर्पित रहैत छथि।

सरिपहुँ माता सन स्नेह, वात्सल्य दोसर केयो नहिं लुटा सकैछ। नेनाक हँसी पर बलिहारि जाएब, नेनाक कानबे दु:खी भऽ जाएब माता केर सहज प्रवृति छैन्ह।

तें तऽ कहल जाइछ जे भगवान धरा पर अपन विकल्पक रूपमे माता

कँ पठौलन्हि। मायक स्नेह भरल थपकी कखनो नहिं बिसराइत छैक। जीवनक प्रत्येक मोर पर माएक स्नेह सदैव हौसला दैत छैक। देतैक कोना नहिं? कियेक तऽ असिमित स्नेहक संग माय अपन नेनाक स्वास्थ्य, मनोबल, समृद्धि आओर उज्ज्वल भविष्यक नींव नेनपने सऽ दृढ करैत रहैत छथि प्रतिपल, प्रतिक्षण।

गृहकार्य सऽ कतबो अपसियाँत रहथि परंच नेनाकँ कोरमे उठाबिते सभटा बिसरि मात्र नेनाक विषयमे सोचय लगैत छथि आ मुँहसऽ अनायासे संगीतमय स्वर प्रस्फुटित होमय लगैत छैन्ह। रंग-विरंगक निनियाँ (मलारि) रचैत गाबि-गाबि नेनाकँ ठोकि सुतबैत छथि।

दादी, नानी तऽ गर्वित होइत कहैत छथि जे मूलधन सऽ बेसी प्रिय सूद अर्थात अपन बेटा, बेटी सऽ बेसी प्रियगर पोता, पोती, नाति नातिन होइछ। दादी, नानीक अवस्थामे गृहकार्यक भार सेहो हुनका सभपर कम भऽ जाइत छैन्ह तँ ओ' लोकनि आओर राग-तानसऽ नेनाकँ निनियाँ गाबि दुलराबैत रहैत छथि।

आजुक एकल परिवारमे निनियाँ लोक बिसरल जा रहल अछि। कामकाजी माय "सेविका" भरोसे नेनाकँ छोड़ि दैत छथि। एहनमे लगैछ जेना एकगोट अनमोल विधा नहूँ-नहूँ बिसरायल जा रहल अछि। नेनासँ नेनपनक आनन्द छिना रहल छैक जे चिंतनक विषय अछि। परंच आजुक युवापीढ़ी पुनः नेनपन सुरक्षित करबा आओर मातृत्व लुटेबा लेल

कृतसंकल्पित भए आगू आबि रहल छथि। शोसल मिडियाक माध्यमे निनियाँ गीतक पुछारि करय लगलीह अछि। ई बड़ हर्षक गप थिक।

स्त्रीगण सदति अपन संस्कार बचेबामे आगू रहैत छथि, तऽ एहन अनमोल विधा कोना बिसरौतीह।

कतोक विद्वजन बालसाहित्यक समृद्धि हेतु प्रयत्नशील छथि। किछु नव रचल जा रहल अछि, किछु पुरान जोहल जा रहल अछि परंच एकल परिवारक कारण किछु उदासीनता छैक। उम्मीद अछि नव पीढ़ी एहि विधाकेँ अपनौतीह आओर सम्हारतीह। एहि क्रममे हमहुँ किछु छोटछिन प्रयास संग अपन पहिल रचना लए उपस्थित भेलहुँ अछि। आशा अछि अपने लोकनिक स्नेहाशीष संग समुचित मार्गदर्शन भेटत।

शत्–शत् नमन वन्दन श्रेष्ठ विद्वजन आओर प्रिय सखा–वन्धु केँ जनिका प्रसादे हमरा सन अति साधारण व्यक्ति कलम उठा किछु लिखबाक लेल प्रेरित होइत छी।

सादर सविनय प्रणाम संग आभार व्यक्त करैत छी आदरणीय श्री हितनाथ झा भाइजी केँ जे सदति नव रचनाकारक हौसला बुलंद करैत रहैत छथि। संगहि हमरा लोकनिक प्रेरणा बनि समुचित मार्गदर्शन करैत रहैत छथि।

सादर सविनय प्रणाम संग सादर आभार आदरणीय भीमनाथ भाइजीक जनिकर वरद्हस्त सदैव माथपर पाबि आनन्दित होइत छी।

सादर सविनय आभार प्रो0 दमन कुमार झा जी कँ जे अपन अनमोल क्षण मैथिलीक सेवार्थ उत्सर्जित करैत एतेक विशिष्ट भूमिका लिखि पोथीकँ पूर्णता प्रदान केलैन्ह।

सादर सविनय प्रणाम! आभार! समस्त विद्वजनकँ जे प्रत्यक्ष आओर अप्रत्यक्ष रूपे हमर पथ प्रदर्शक बनि स्नेहाशीष दैत रहैत छथि। हिनके लोकनिक मार्गदर्शनमे हम नेना सभक लेल दू आखर लिखि सकलहुँ।

आशा अछि अहाँ सभ कँ "निनियाँ" पोथीक बालगीत रिझाओत।

सुधीजनक स्नेहाधीन

कल्पना झा

सखवाड़

आश्विन कृष्णपक्ष अष्टमी

28 /09 /2021

1

चुप रह, चुप रह बौआ रौ

तोहर माय कमौआ रौ

खूब खेलौना कीनि कऽ अनथुन्ह

कुंजी बला बानर अनथुन्ह

बानर के तों देख कमाल

कुंजी भरने करए धमाल

नाचए बानर ताक– धिन– धा–

हँस रौ बौआ

हा – हा – हा – हा – हा

2

सुन रौ बौआ लगा कऽ ध्यान

मायक निनियाँ भेलौ पुरान

सुनहीं एकटा नवका बात

कल पुर्जे सँ चलतौ काज

बोतल भरि–भरि दूध पियौतौ

निनियाँ गाबि कऽ ठोकि सुतेतौ

सूतिकऽ उठबें जाहि खन तों

कोरा उठा बुलेतौ खूब

सांइसक भेलै खूब विकास

उड़लै सभटा लोक आकाश

3

व्हाट्सएप मैसेज आयल गे

बौआ कतहु हेरायल गे

इंटरनेटक जाल गे

भेलै बड़ जंजाल गे

कोना कऽ ताकब बौआ कँ

ककरो किछुने फुराय गे

पुछियनु गूगल बाबा कँ

करताह कोनो उपाय गे

चन्द्रयान उड़य आकाश गे

बौआ भेलै सवार गे

गूगल बाबा बड़ बुधियार

बौआ जोहि केलन्हि उजियार

4

एल गे.......!

मेल गे......!

बौआ चढ़तै रेल गे

रेलसऽ जेतै पटना

कीनिकऽ लौतै चटना

बाबू चटदऽ लेथिन्ह छीनि

ई की बौआ अनलहुँ कीनि

बिसरू आब पुरनका रीति

टॉफी चाकलेट आनू कीनि

चूसब आब ने लेमनचूस

पीबि लियऽ ट्रापिकाना जूस

5

बौआ, बुच्ची बनू स्मार्ट

आब ने रहलै पुरना बात

साफ–सफाईक चलल अभियान

संग पूरि कऽ बनू महान

नंग–धरंग नहिं रहियौ आब

सहजहिं बिगरत सभटा बात

मेमी पोको पेंट पहीरि

बनिकऽ रहियौ धीर–गंभीर

भरि दिन करब शू..... शू..... शू.....

भरि–भरि पेंट में राखब गूँह

6

अल्ले छू

मल्ले छू

कोन देश छू

अमेरिका छू

अमेरिका बला केर नाम की

जुकरबर्ग भाइ

आनू बजाइ

एप बनबाउ

जाहि सँ

निनियाँ सुनाउ

नेनपन घुराउ

नेना बचाउ

नव रीति उठे

पुरना खसे ।

7

बौआ– बुच्ची सुनू अकानि

छोड़ू सभ पुरनका बानि

आब ने खिस्सा कहती नानी

सुनू यै बुच्ची नव पिहानी

नानी, बाबी भेलीह विलीन

माय एलेक्सा आनलन्हि कीनि

राग–तान सँ गाबय गीत

बनत अहाँकेँ बड़का मीत

गीत सुनू आ सुनू पिहानी

मोन पाड़ि देत सहजहिं नानी

8

घो– घो रानी, घो– घो रानी

घूरि घर जाऊ बजबए नानी

बौआ– बुच्ची बड़ होशियार

सुनए आब नहिं ककरो बात

कथा, पिहानी सभटा फेल

कलजुग केर छै सभटा खेल

घो– घो रानी भेलीह पुरान

गूगल बाबा भेलाह जवान

चुटकी मे सभ मंत्र सिखौताह

पढ़ल पंडित भने बनौताह

9

एलेक्सा मौसी आउ ने

खिस्सा नब सुनाउ ने

दुनियाँ नब देखाउ ने

नवका रीति चलाउ ने

बाबी नानी आब ने भेटथि

ताकि हेरि कऽ लाउ ने

औका बौका तीन तरौका

हमरा संगमे खेलाउ ने



10

बुच्ची अहाँ छी बड़ खुरलुच्ची

खाय कहाँ छी कटहर बिच्ची

आम–अनार ओ बरहर–लीच्ची

नीक ने लागय अहाँकेँ बुच्ची

केरा नारिकेल ओ समतोला

देखि अहाँ छी आगि बबूला

अहाँ के चाही बर्गर, भेल

सेहत सँ नहिं जकरा मेल

आब करू जुनि हा– हा– ठि–ठि

सुबुधि सयानि बनू यै बुच्ची

11

मेट्रो रेल मेट्रो रेल

बौआ चढ़तै मेट्रो रेल

टिकट केर नहिं कोनो झमेल

सभटा छै टोकन केर खेल

भटकावक नहिं कोनो बात

अपने देखबै सभटा बाट

गरमी जाड़क करए निदान

कखनो नहिं होयब हलकान

पहुँचाबए क्षणमें गन्तव्य

मेट्रो बड़ संस्कारी सभ्य

12

घूआँ घूँ..... आब भेलै पुरान

मल्ले छू.... में नहिं छै जान

एलै गे बौआ नवका जुग

बजिहैं ओही हिसाबे किछु

गाम–घर सभ छोड़लक आब

बनल बिलायती बाबू साब

टीक कोना के पकरब आब

मोछो केलक सफाचट सभ

नव पोखैर के खुनतै आब

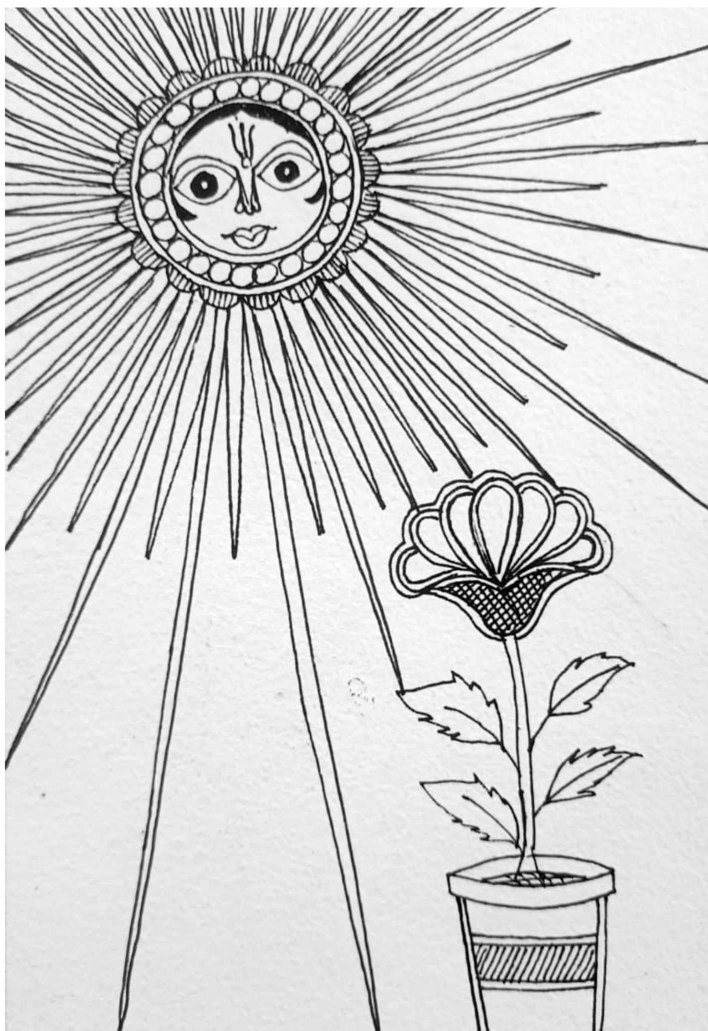
पुरनो पोखैर भथलक सभ

13

गाछ–वृक्षमे जीव विराजए
करए सभखन पर उपकार
हमरे सभ संग जीवन जीबए
बनिकऽ हीत–मीत ओ प्राण
गाछ,पात नहिं नोचबै कखनो
सदति जलसँ देबैक जुराय
गाछे पर निर्भर अछि जीवन
नहिं तऽ सभटा शून्य मसान
गाछक छैक भनसिया पत्ता
सूरज सँ लैत छैक ओ ताप
मूल माटि सँ सोखि लैत छैक
जल,लवण,खनिजक भंडार
भोरे–भोरे उठिते सूरज
सौंसे किरण पसारैत छैक
सभ पात मिलि भानस कए
परोसि गाछ कँ खोअबैत छैक

क्रिया कहाबैछ प्रकाश संश्लेषण

एहि सँ होइछ गाछक संरक्षण



14

बौआ सुनियौ ध्यान लगाय

देसिल कौआ डरे डेरायल

नानी कहलनि कटबौ कान

तें तऽ कौआ भेलै विरान

भागल भागल गेल दुरदेश

आब ने दए कोनो संदेश

आ रे कौआ आ घुरि आ

रूसल बौआ भने मना

आब ने नानी कटथुन्ह कान

आनि खोऔथुन्ह मीठ पकवान

15

माँ गे माँ सुन हमर बात

"आया" सँ नहिं चलतौ काज

हमरा अपना कोर उठा

अलिया-झलिया गीत सुना

घूआँ- घूँ पर हिरला झुला

मिठका- मिठका गीत सुना

निनियाँ के तों आन बजा

सुतते बौआ निन्न सँ

सपना देखतै चेन सँ

मायक ममता बड़ अनमोल

भेटए ने कोनो देने मोल

16

बानर मामा आउ ने

हमरा संग खेलाउ ने

हमर आंगन आउ ने

रूसि क दूर पड़ाउ नै

मामी के संग लाउ ने

ता– थै नाच देखाउ ने

घघरा नब सियाउ ने

रूसल मामी मनाउ ने

नथिया एगो गढ़ाउ ने

मामी के पहिराउ ने

नथिया बाजय– पीं– पीं– पीं

हँसतै बौआ– ही– ही– ही

17

आ रे सूगा आ रे आ

पिंजरा मे नहिं राखबौ आब

उड़ि कँ जो तों सुन्दर बोन

तोड़ि कँ ला तों पाकल लताम

सुन्दर बोनक राजा शेर

ओतय ने पहुँचय मनुषक खेल

जहर, माहुर पेस्ट्रीसाइड

लाख जतन करू कोनो उपाय

साफ स्वच्छ सभ अमृत फल

तोड़ि आन मोर बौआ लेल

बौआ खेतै मीठ लताम

सूगा पढ़तै राम राम

18

जंगल जंगल नाचय मोर

उठू यौ बौआ भ गेल भोर

मोरक पॉखि सतरंगा छै

बौआक जेहने अंगा छै

इन्द्रधनुषमे कोन कोन रंग

बूझू बौआ जुनि करू तंग

बै–नी– आ– ह– पी– ना– ला

खोलू यौ बौआ ताला

बैगनी, नीला, ओ आसमानी

हरियर, पीयर, लाल, नारंगी

सात रंग सँ चमकए दुनियाँ

झुन झुन बाजै छै झुनझुनियाँ

19

गोल गोल छै शून्य रौ बौआ

सूरज चन्ना तारा गोल

माएक माथक टिकुली देखलहुँ

गोल गोल छै गोलमगोल

मिठका समतोला छै गोल

समतोले सन दुनियाँ गोल

गाड़ी केर पहिया छै गोल

बौआ खेलथि गेन्दो गोल

थारी गोल छै रोटी गोल

नानी फटकथि सूपो गोल

गोल गोल घूमै छै दुनियाँ

बौआ घुरमै गोलम गोल

20

मुर्गा बाजय कुकरू कूँ
सुन रौ बौआ सुनि ले तूँ
जुनि कर बदमाशी आब तूँ
पढ़ल पंडित बनि जो तूँ
भोरे भोरे तेजि ओछाओन
करिहैं बौआ प्राणायाम
शीर्षासन, धनुरासन, ध्यान
करिहैं बौआ सर्वविधान
माए धराकेँ दए आभार
मोन सँ करिहैं सूर्यनमस्कार

21

सातेभवतु भेलै पुरान

पोथीमे छै नवका ज्ञान

ट्विंकल– ट्विंकल लिटिल स्टार

अपटूडेट तों रहिहैं आब

जॉनी जॉनी यस पापा

सबैया डेढ़िया कैँ कहियो बाय

खाँत रटब थिक व्यर्थक काज

जेबी मे केलकुलेटर राख

गुरुजन केर की आदर मान

मंगनी बाँटय गूगल ज्ञान

यंत्रे पर सभ जिम्मेदारी

मुट्ठी मे छै दुनियादारी

जंतर–मंतर प'रक आश

गुरुक महिमा अपरंपार

22

सुन रौ बौआ अद्भुत ज्ञान
अपना जीवक रखिहें ध्यान
बाबा कँ छैन्ह नाना व्याधि
पटतौ तोरो कटबें काहि
अवडेरने रह बूढ़– पुरान
तखने छौ तोहर कल्याण
माय गे माए हम रहब सतर्क
तोरा वचनक बुझलहुँ तर्क
धेलकौ तोरो खोंखी दम्मा
तहूँ ने अबिहैं कखनो सोझाँ
अपन गृहस्थी राखब भिन्न
कनियाँ संगे रहब निचेन

23

सर्दी– गर्मी ओ बरसात

आब ने रहल प्रकृतिक हाथ

कलजुग देखू भेल जवान

मोचरै खूब प्रकृतिक कान

एयरकंडीशन केर खेल

सभ मौसम पर कसल नकेल

डरे पड़ायल जाड़ भजार

टुकटुक ताकए गर्मी यार

वर्षा केर नहिं कोनो ठौर

कौखन बिषुखल कौखन जोर

सुन रौ बौआ कान लगाए

रूसल बदरा आन बजाय

रिमझिम रिमझिम झहरत मेघ

कागतक नाव ले जोतिहैं घेंघ

24

माँ गे माँ हम स्कूल जेबै

पढ़ि लीखि हम बाबू बनबै

बाबू बनि हम उड़ब आकाश

चन्ना पर हम करबै वास

चहुँदिशि भेटत शुद्ध आकाश

प्रदूषण केर ओतय ने वास

टिम – टिम – टिम – टिम

करए तरेगन

गीत गायब हम

गुन – गुन – गुन – गुन

25

तितली गे तूँ सुन्दर रानी

फूल फूल सँ सुनए पिहानी

चाकलेट देबौ आनि अनेक

हमरहु सुना पिहानी एक

भेटलहु कतय ई सुन्नर पाँखि

हमहुँ आनब कहुना ताकि

तोरे संग हम जोड़ब प्रीति

दूनू संग मिलि गायब गीत



26

पानि मलिन भेल, हवा मलिन भेल

फल, फूल आओर गाछ मलिन भेल

तरकारी आओर दालि मलिन भेल

दूध दही आओर अन्न मलिन भेल

माए धरा केर कोर मलिन भेल

देखि देखि सभक मोन मलिन भेल

चल रौ बौआ चल दूरदेश

जोहब कोनो स्वच्छ प्रदेश

बाबा यौ बाबा लियऽ संज्ञान

चलल स्वच्छ भारत अभियान

27

इचना माछक झोर गे

बौआ मचबै शोर गे

हम नहिं खेबै इचना झोर

दूनू आँखि सँ झहरय नोर

“बा” गे “बा “ तों ले ने कोर

तोरा स्नेहक ओर ने छोर

सूगा मैनाक बान्हें कौर

मूँह खोआबै छैं बलजोरि



28

चल रौ बौआ पिज्जा हट

छोड़ आब ओ पुरना हठ

बिसर आब ओ गूड़क पूड़ी

चान मामा केर फूटल थाड़ी

फुटले थाड़ी सँ बरिसै नेह

सौंस भेने आलोपित नेह

विलासिता सँ जोड़लहुँ स्नेह

अपनापन केर बिसरू नेह



29

नोन तेल दए बनल बघरुआ

बौआ खेतै खम्हौरक तरुआ

ललका ललका रोटी मड़ुआ

इचना माछक झुरगर भुजुआ

तैयो मूँह फुलौने बौआ

भाखय खायब कन्ना तरुआ

कन्ना लए गेल नन्ना

बौआ पसारलक घौंना

चुप रहू, चुप रहू बाउ बुधियार

तिलकोरक अछि लागल सचार

30

देसिल कौआ डरे पड़ेलै

कार कौआ के भेलै राज

मिठका बोली मनुषो बिसरल

कहू जमाना केहन आयल

बौआ बाजए ठोसगर बोल

सदिखन बाजू नापि नापि बोल

पलमे झगड़ा पलमे मेल

बोली केर छै सभटा खेल

कोइली बाजए मिठ–मिठ बोल

सभक हियामे तें बसि गेल

31

उठु–अठु बौआ भोर भऽ गेल

उगलै किरीन दिन जगमग भेल

आबो उठियो ने

सौंसे जहान उठि गेल

उठु–उठु.............

कारी अन्हार राति भेलै निपत्ता

भुक–भुक भगजोगनी सभ भेलै लापत्ता

चन्ना के पाछू–पाछू भागल तरेगन

कुकरूँ–कूँ मुर्गो के बाँग पड़ि गेल

उठु–उठु................

चिड़ैक चुनमुन सँ गूंजि उठल आँगन

बिहुसैत गुलाब लाल लागय सोहाओन

झहरल सिंहार देखू गमकल आँगन

सुनू, मंदिरकें घंटी सेहो बाजि गेल

उठु–उठु..................

दूध औंटि काकी घोरै छथि जोरन

कौआ कुचरि कहय आओता आई पाहुन

माय देखू करै छथि भानसक ओरियाओन

देखू, दहीकें छाँछी बिलारि चाटि गेल

उढु-उढु....................



32

पहिलुक रोटी गायक नाम

प्रात उठि कऽ करू प्रणाम

गाय माय छथि बड़ हितकारी

दूध पियाबथि भरि– भरि बाटी

खेलथि बौआ टुन्नाक संग

बिहुँसय ढोर आ पुलकित मोन

गाय, माय छथि दुनू समान

सदति करू हुनकर सम्मान



33

एलै कोरोना काँपय जमाना

मोन पड़ै छै सभके नाना

बिसरि गेल विज्ञानक खेल

मोन पड़ै छै सभके "वेद"

आब केने की होयत खेद

वर्ण– वर्ण केर बुझियौ भेद

शौच–अशौच ओ सखरी अमनियाँ

स्वस्थ रहै केर सभ पिहनियाँ

सोइरी घरक बुझियौ मर्म

व्यर्थ बूझि नहिं करियौ भंग

भने निबाहू सभटा कर्म

तखने पायब संतति पूर्ण

34

सूरज बाबा दौड़ै छै

भने कबड्डी खेलै छै

सभ राशि मे विचरै छै

सभ रंग दिवस देखाबै छै

मकर मे जा सिरसिरबै छै

मेष मे घाम छोड़ाबै छै

सभ सँ निडर कहाबै छै

बादल देखि नुका जाइ छै

सभके भक–चक लागै छै

जँ इन्द्रक धनुष सजाबै छै

35

दुनियाँ छै सरिपहुँ मे गोल

मोन परै अछि ‘बा’ केर बोल

तीर्थाटन सँ पहुँची गाम

क्षौर कर्म बिनु नहिं छल ठाम

पोखरि मे छल अलगे घाट

अपन इनारक तें बड़ ठाठ

बाबा कहथिन्ह दूरे पड़ा

छूल जायब नहिं लऽग मे आ

आधि–व्याधि केर सभटा खेल

बुझियौ नहिं छल वर्णक भेद

36

एतबा बुधियारी जनु छाँटू
मनुख अपन ओकातिकेँ बूझू
दानव– मानव कलमच बैसू
"देव", "प्रकृतिक" मर्मकेँ बूझू
मनुख कहए हम उड़ब अकाश
सगर जगत पर हमरे राज
कहए प्रकृति रहू समतूल
नहिंतऽ पाएब सभ प्रतिकूल
ई दुनियाँ थिक माया जाल
सभ दिन सभ पर भारी काल

37

सुनू–सुनू मनचनमा माय

गूड़क पूआ दियौ बनाय

चन्दामामा बसथि आकाश

भूमि कोरोना मचबए त्रास

अंशू बौआ भुखे बेहाल

कहथिन्ह चानक पूड़ी खाएब

लॉक डाउन मे बन्द सबारी

रॉकेट, बस, तिनपहिया गाड़ी

पहुँचब कोना कऽ चानक पास

करब जतन कतबो परियास

बौआ कैँ सभ मिलि भरमाएब

मामे हाथे पुआ खोआएब

38

चुप रह– चुप रह बौआ रौ
आओल समय झमौआ रौ
ट्रेन, बस सभ भेलै बन्न
हवाई जहाजक कटलै पंख
कीनि देबौ खरखरिया गाड़ी
बैसि ओहि पर कऽर सवारी
चारू काते लागल ओहार
फूजल नहिं छै कनिञो द्वार
सोशल डिस्टेंसिंग कैँ मानि
चारू कहरिया धेलकै कोन

39

बौआ रे बौआ जनु तों कान

करिया कौआ कटतौ कान

बैसलै कौआ गाछ लताम

खोदि–खोदि खाई छै पाकल लताम

चल मनचनमा नानी गाम

बजा कँ तों मामा के आन

मामा आयल गुलेंती तानि

सटकल कौआ छुटलै घाम

डरे– डेरेलै दूर पड़ेलै

अपन पकड़ने दूनू कान

40

बौआ, नूनू कलमच बैसू

एमहर– ओमहर जनु अहाँ कूदू

दौड़ कऽ जाएब आबने दोकान

दुष्ट कोरोना पकड़त कान

साबुन रगड़ि कऽ माँजू हाथ

सेनिटाइजर राखू साथ

व्यर्थ ने कखनो छुबियौ नाक

दुनू आँखिक राखू ध्यान

मूँह झाँपि कऽ पढ़ियौ पाठ

रहू पहिरने सदिखन मास्क

41

दौड़िक चललै रेल गे

भेलै खूब झमेल गे

इंजन पाछू डिब्बा भागै

छुक–छुक–छुक–छुक गीत सुनाबै

टीसन–टीसन सीटी मारै

नेना सभकेँ मोन ललचाबै

टन–टन भाजा चना मसाला

कुर–कुर मुर–मुर भेल गे

देखि–देखि कऽ नेना सभकेँ

जीह सँ खसलै लेर गे

42

माए गे माए सुन हमर बात

महींस कीनि दे हमरो आब

पौकेट–पौकेट दूध पियौतौ

बरफ मलाई सेहो खुऔतौ

बाबू कें नहिं कनिञो ज्ञान

बड़का भालू देलनि आनि

पसरल सभतरि गोबर–गोंत

चिबबए सभखन हरियर घास

कहथिन्ह यएह थिक महींस रौ बाउ

पाड़ी तरे बियेतौ आब

खिरसा, दूध आ छाल्ही खइहें
महिसक सेवा मोन सँ करिहें

फेकनाक बाबू बड़ बुधियार
पढ़ल महींस बन्हलन्हि द्वार

घासो ने खाई छै पीबए ने पानि
दूध, मलाई दै छै आनि

कहलनि महींस छै बड़ बुधियार
“ मदरडेयरी “नामे जगजियार

43

सुतु, सुतु बौआ बाबाक मचान

शीतल बसात बहए आमक बगान

सूति उठब तऽ

सूगा देत पाकल आम

सुतु...................

सुपक गोपी देखु गम–गम–गमकय

बंबई, जर्दालू अधिक ललचाबए

मालदह, कलकतिया केर पाल सजि गेल

देखु मुसबा संग मुसरी कुतरि भागि गेल

सुतु...........................

सरही विविध भाँतिक देखियौ लोभाबए

नेना सभ सूति उठि ओकरे झखाबय

सुप्पक आ डम्हक केर लागल पथार

देखियौ बनरनी समटि भागि गेल

सुतु....................

उखरिमे कूटि बाबी बनबथि गारा

अम्मोटके सभ ठाम पसरल पथारा

बिढ़नी, पचहिया केर झुंड मरराई

देखु ढोरे पर मौसीकेँ बिन्हि भागि गेल

सुतु.................



44

बौआ झूलए झुलना

नानी माँ केर अंगना

सोना केर पालना रेशमक डोरी

नहू–नहू नानी कहए पिहानी

बौआ करे घौंना आनि दे खेलौना

आब नहिं झूलबौ असगर झुलना

कुंजी बला बानर दाढ़ीवाला बेंग

देखते बौआ जोतलक घेंघ

नानी गे तों आनि दे गुड़िया जापानी

संगे संगे सुनबौ तोहर पिहानी

बौआ झूलय झुलना नानी माँ केर अंगना

45

बहुत सहल मैथिल संताप

करू निवारण एकर आब

मिलि–जुलि सभ रहू एकसंग

तखने रहतीह मैथिली संपन्न

बौआ– बुच्ची होउ तैयार

आब मैथिली करथि गोहारि

निज भाषा केर राखू मान

पढ़ू, बाजू करू सन्मान

अपनहि नहिं जँ राखब मान

करू विचार करत की आन

माए मैथिली हेतीह तिरस्कृत

बोली बनि क धरतीह कोन

46

मुनियाँ गे मुनियाँ तों रुनझुनियाँ

परी देश सँ आयल छें

धैर्य, प्रेम केर असीमित सागर

हियगागर भरि लाओल छें

आधि–व्याधि सभ अपना हिस कए

सुख सभतरि छलकाबै छें

सगर जगत लेल अदना बनि कऽ

सभ कँ अपन बनौने छें

तन–मन की सर्वस्व समर्पण

निज कर्तव्य बनौने छें

सुनगे मुनियाँ रानी तोंहीं

ममतामयी कहाबै छें

47

ता–ता थैया दिग–दिग थैया

वाकर कीनि कऽ ला रौ भैया

आब ने रहबौ सूतल पड़ल

मारि ठेहुनियाँ छी बड़ थाकल

एमेजॉन पर करिहैं डील

ललका वाकर अनिहैं कीनि

पीं–पीं–पीं–पीं–पिपही बाजए

सुन्नर–सुन्नर गीत सुनाबए

घूमि कऽ जाएब नानी गाम

नानी माँ के करब प्रणाम

48

काटि–छाँटि कऽ सात गो डंडा

बढ़ई भाई केर अद्भुत फंडा

बनि गेल झट–पट शाही गाड़ी

बौआ–बुच्ची करए सवारी

गाड़ी छैक ई सभ पर भारी

बुल्लेट आ चारिपहिया गाड़ी

छोड़ि ठेहुनियाँ डेग बढ़ाबए

नेना सभ कँ चलब सिखाबए

ता–ता थै–थै डेग बढ़ाबय

नानी माँ केर मोन हर्षाबए

49

कतरन–फतरन केर संगोर

हरियर सूगा बनल बेजोड़

लाल–लाल पहिरौलन्हि जामा

खूब जुगुतगर दरजी मामा

एकर ने लागल कोनो मोल

सरिपहुँ छै सूगा अनमोल

मौसी देलथिन्ह चार मे टाँगि

बौआ केर छैक जतय ओछाओन

लपकि कऽ बौआ पकड़य कान

सूगा उड़ि गेल नानी गाम

50

निनियाँ गे तों सुन्नर रानी

आ सुनेबौ रोज पिहानी

एगो बात तों हम्मर मान

बौआ ऑखि मे कर विश्राम

झट आबय छें झटे पड़ाय

क्षणहिं मे बौआ उठथि चेहाय

बौआक माय भेलीह चौचंग

निन्न चैन सभ भेलन्हि भंग

51

छः महिना छथि कुमर बौआ

साजल–राजल सुन्नर बौआ

कोरा–कोरा कलमच बैसथि

सभक बोलारे ध्यान सँ सूनथि

नहूँ–नहूँ सीखथि सभ बात

चूसथि आँगूर फेकथि लात

उनटि–पुनटि पेटकुनियाँ देल

सीखि लेलन्हि घुसकुनियाँक भेद

सुनितहिं कुकुरक भौं–भौं बोल

मारि ठेहुनियाँ आँगन गेल

52

नीनपुरमे बसै छै निनियाँ

साड़ी पहिरए रंग जमुनियाँ

हाथ नेने ललका झुनझुनियाँ

दौड़ल आबय आँगन मुनियाँ

परीलोक केर कहए पिहनियाँ

राजा केर छै सुन्नर रनियाँ

चुन–चुन–चुन बाजय चुनमुनियाँ

सुतु–सुतु सुन्नरि बेटी मुनियाँ

आबि आँखिमे बसलै निनियाँ

खन–खन मुसकी ठोर पर आबय

क्षणहिं कानि कऽ ठोर बिजकाबए

आँखि खोलि पुनि–पुनि की ताकय

छठि मैया अपनहिं दुलराबए

53

जाफर–काफर सभ गुण आगर

नेना सबहक सभ दु:ख हारक

करामात इ क्षण–क्षण बदलए

दूध, तेल केर संग जँ पाबए

पाथर पर घसि नित्य पियाबू

नेना सभ कँ पुष्ट बनाबू

सरदी–खोंखी केर नहिं डर

एकरा लऽग नहिं ककरहु ठौर

कड़ू तेल संग एकर इयारी

दूनू थिक औषधि बड़ भारी

54

झुन–झुन–झुन–बाजए झुनझुनियाँ

सुतु–सुतु बौआ धऽ लेत झुनिञा

झुनिञा कँ छैक बड़का कान

चम–चम चमकै उजरा दाँत

लप–लप लपकै ललका जीह

देखि कऽ थर–थर काँपय हिय

नेना सभकँ खूब डेराबय

अभिभावक केर मीत कहाबए

मनमानी पर कसए लगाम

क्षणहिंमे नेना पकड़य कान

55

कजरौटी केर काजर मौसी

अति प्रियगर तों पीसी–मौसी

सेकि–सेकि कऽ बड़ रे जतन सँ

कोषा चीरि लगाबथि नानी

सात ठाम प्रतिदिन कए टीका

नजरि–गुजरि सँ बचबथि मामी

डोका सन अति सुन्नर उपमा

बिनु काजर नहिं शोभए नैना

काजर–विजर रूप निखारए

पीसी मौसीक मन हर्षाबए

56

प्रियगर मोहक कतबो लागी

किन्तु सुकोमल नेना छी

मुँह सटा नहिं चुमिहैं कखनो

मैल हाथ नहिं हमरा छू

साफ स्वच्छ जे हो बड़ तन्नुक

वसन वएह टा चाहैत छी

नव–नूतन दूषित रंग रांगल

देखिते हम डेरा जाइ छी

आडम्बर देखाउस नहिं भावए

चकाचौंध सँ भागै छी

इत्र फुलेलक गंध ने भावए

उबटन तेल गमकाबै छी

57

ब्रह्म मुहूर्त मे बाबा उठथि
सुमिरि देवगण हाथ निहारथि

माय धरा कँ करथि प्रणाम
पीबथि तखने बसिया पानि

नित्य कर्म जाथि पहिरि खराम
कुशलक्षेम पुनि पुछथि समांग

तीन बेर पद्–हस्त मटियाबथि
शौचकर्म सँ जखने आबथि

पोखरि धसि कऽ खूब नहाबथि
दीनानाथ कँ जल चढ़ाबथि

दीप लेसि गुग्गुल गमकाबथि

शालिग्राम कें भोग चढ़ाबथि

बौआ माथ मे चानन लगबथि

कोर उठा नैवेद्य खोआबथि

जीवनचर्या शोधल जीबथि

स्वस्थ जीवनक मंत्र सिखाबथि



58

बाबा केर सुन्नर फुलवाड़ी

रंगबिरंगक क्यारी–क्यारी

लता–पता औषधि तरु बेल

देखि–देखि मोन पुलकित भेल

आम, लताम, बैर,जमरूद

देखिते लागल जोरगर भूख

केरा, नारिकेल, कटहर लिच्ची

तोड़िकऽ अपने खाथिन बुच्ची

जामुन, बरहर, ताड़, अनार

देखिते मचलै जियरा हमार

जड़ी–बूटि केर अनूप सुगंध

आलोकित भेल हिय मकरन्द

59

मायगे सुन्नर बौआ बनबौ

घरसँ बाहर हम नहिं जेबौ

भेलैक समैया बड़ विपरीत

बदलल सभटा दुनियाँक रीति

बड़रे बेगरते बाहर जाएब

पहिने मुँहमे मास्क लगायब

झटपट सभ निपटायब काज

साबुन पानिसँ धोएब हाथ

टीका लए होयब तैयार

होएत कोरोना सट्टोपार



60

बाबाक बाड़ीमे चारुकात

चतरल भंगरैया केर पात

भंगरैयामे बड़–बड़ गुण

कहथिन्ह बाबी बौआरे सुन

सरदी, खोंखी, नोचनी, टीस

झटपट माथपर थोपबौ पीसि

फूलन–सूजन, दर्द, बोखार

बूटी एक अजब चमत्कार

काजर बनिकऽ नयन सजाबए

रोग–व्याधि सँ भने बचाबए

61

मलहा भैया मलहा भैया

देबौ तोहरा सोन रुपैया

लड्डू, पेड़ा, खाजा, बुनियाँ

झिल्ली कचरी फोंफी छनुआँ

लौंग, सुपारी भरल पुड़िया

पाकल–पाकल पानक बिड़िया

आनिकेँ दे तों एगो मलहिया

गूंथि डोरि पहिरायब बौआ

थेत्थर, राकस, भूत–भुतिनिञा

दूर भगाएब डाइन–जोगिनिञा

62

बौआक नानी गुथलनि हार

आनिकऽ हैंठा मूंगा हजार

बीचमे गुथलन्हि ताम सहोदर

दूनू कातमे दाँत छैक बानर

चम–चम–चम–चानक–चमकार

जन्तर–मन्तर केर झंकार

जन्तर छैक बहुविधि प्रकार

गुण–धर्मक अतुलित भंडार

नव–नव उर्जा नव संचार

शुद्ध मोन नव बुद्धि विचार

63

बौआरे बहलै केहन बसात

आबने कखनो बाहर भाग

दू गज दूरी बनौनहिं राख

मुँहपर मास्क पहिरनहिं बात

सेनिटाइजर राखिहैं साथ

साबुन पानिसँ धौइहैं हाथ

आँखि, नाक नहिं छुबिहैं हठात्

मोन राख नहिं धरिहैं लाथ

शुद्ध राख आहार–विहार

जंकफूड केर बिसरि सचार

मधुरस फल संग नेबो खटगर

रूचि बढ़बिहैं बौआ जोरगर

क्षण–क्षण घोंटहि पीबिहैं पानि

भगतहु डरे कोरोना मान

वैद्य, विद्व सरकारक मान

व्यर्थमे कियेक गँमेबें जान

64

भोरे उठिकऽ सूरज बाबा
कहै छथि बौआ आँखि मिला
देरी सँ जँ उठबें रे बौआ
तेज सँ जेतहु आँखि मुना
आँखि मिलेबा सँ जँ चुकबें
स्वर्णामृत सँ बंचित रहबें
प्रतिदिन भोरे उठि जो तों
नित्यकर्म सँ निवृत्त हो
ईश भजन पूजन कए बौआ
दिनकर सँ स्वर्णामृत पा
कर्मशील बनु तजि आराम
तखने चमकब सूर्य समान

65

बौआक बोली बड़ अनमोल

मिसरी घोरल मिठ–मिठ बोल

अमृत रस छिलकाबै छै

सभकेँ अपन बनाबै छै

मीठ वचन सँ हरिलय मोन

दुर्जन, चंट जँ कंस समान

अमृत रस प्रेमक छिलकाबए

अपन–आनक भेद मेटाबए

नेनाक हिय भगवानक वास

सभक सभ खन पूरय आश

66

नेना हम अखन अज्ञान

पढ़ि–लिखिकँ बनब सुजान

श्रेष्ठजनक हम राखब मान

चरण छूबिकऽ करब प्रणाम

बिनु आदर नहिं पाएब ज्ञान

कहि गेला अछि चतुर सुजान

कर्म हमर हो परहितकारी

आबय विपदा कतबो भारी

सत्यक पथ पर अडिग चलब हम

राखब माय वसुधा केर मान

67

सूरज, चन्ना, तारा

बौआ राजदुलारा

मायक कोरा शोभे ओहिना

चमकै जेना सितारा

भौंरा सन चंचल दुहु नैन

चपल ठिठोली बिनु नहिं चैन

खन भागय खन घुरि–घुरि आबय

मायक कोरा जा सन्हियाय

माएक आँचरक शीतल छाँह

सत्पथ देखबैछ पकरिकऽ बाँहि

68

बौआ रे बौआ तों अनमोल

बाजएँ सदिखन मिठ–मिठ बोल

अमृत बरिसय बिहुँसय ठोर

जगमग ज्योति जरय चहुँओर

नटखटपन अति मन हरसाबय

तोतरि बोली हृदय जुड़ाबय

भेदभाव नहिं अपन– आन

तोरा लग सभ बंधु समान

जाति–पाति ओ धर्मक मोल

तोरा लेल थिक सभ ढकलोल

69

माएक ममता गाबय गीत

माता सन नहिं दूजा मीत

हृदयामृत मुख पान कराबए

अमृतरस सदिखन बरिसाबए

स्नेहपुष्पसँ सेज सजाबए

मिठगर निनियाँ गाबि सुनाबए

रोग–शोक बहुव्याधि मेटाबए

पट्टाम्बर आँचर फहराबए

अतुलित नेहक मोलने माँगय

आदर मान कनेक ओ चाहए

70

आँगन अधिक सोहाओन मीत

सदिखन चहुँदिश छिलकए प्रीत

पलकक ओटमे राखथि बाबी

सिखबथि मधुमय अमृतबाणी

काकी केर मृदुस्नेह बेजोड़

स्कूल पठबथि भोरे–भोर

पीसी–पीसा छथि बड़ नीक

लालीपॉप खुआबथि मीठ

चुलबुल बहिना बड़ होशियारि

कान पकड़ि पुनि करथि दुलार

रूसल बौआ भने मनाबथि

कदमक गाछमे हिरला लगाबथि

71

बौआक माए छथि बड़ जिहलाहि

मारा माछ देखि जीह पनिछाहि

बाटी भरिकऽ रखलन्हि दाबि

कोन बैसि पुनि लेलन्हि चापि

जेहने माराक झोर सुअदगर

उतरल छाती सँ बनि जब्बर

पीलन्हि बौआ भरि–भरि छाक

पचा ने पेलन्हि भेलन्हि घात

रहि–रहि पेटमे उठन्हि मरोड़

बिलखथि कानथि झहरनि नोर

मायक ममता बड़ पछताय

बौआक कष्टेँ हृदय डेराय

झटपट जोहलन्हि एकर उपाय

लेलन्हि जमाइनक बाती बनाय

तेल बोरि पुनि लेसलन्हि आगि

बौआक पेटक केलन्हि सेकाय

छूमन्तर भेल दर्द मरोर

ममता जीतल हारल चोर

माय थिकीह सर्वोत्तम वैद्य

स्नेह लुटाबथि हरथि क्लेश



72

बाबाक' बाड़ी लागल पसीझ

गुण देखि बाबी गेलथि रीझि

बौआक जखने आबनि छींक

गरमे रस पियाबथि फूंकि

छैक पसीझमे बड़–बड़ गुण

हरियरी राखए अक्षुण्ण

नजरि–गुजरि ओ हवा बसात

चोखगर काँट करए सभ पस्त

कब्ज–नब्ज पर कसल नकेल

चम्मच भरि रस उदरस्थ भेल

73

बौआ रे बौआ अंकुरी खो

बढ़तौ औरदा से बुझि जो

फल टटका जँ खेएबें खूब

निश्चय रोग पड़ेतहु दूर

दूध पीबि तों बनि जो पुष्ट

स्वास्थ्य ने कहियो हेतहु रुष्ट

तीमन ओ रंगबिरहा साग

खेबह मोनसँ नित्य जँ बाउ

बल–बुद्धिमे हेबह प्रवीण

डाक्दर वैद्य सँ छुटतह पिंड

कोक, पेप्सी जँ पीबह बाऊ

पिज्जा, बर्गर संग लगाय

बुद्धि नष्ट तऽ भेले बूझह

स्वास्थ्य सेहो नहिं रहतह दीढ़

दूधने जुड़तहु पीबिहैं दालि

पोसतहु बनि के सद्यह माय

गोधन थिक मातुक पर्याय

सभकें रक्षित करथि रंभाय

गाछ–वृक्ष थिक गुणक खान

बिनु वृक्ष नहिं अछि कल्याण

क्षीर, नीर अछि अमृत तूल्य

बिना नीर नहिं जीवन मूल्य

रहत प्रकृति जखन समतूल

तखने स्वास्थ्य सभक अनुकूल



74

हम छी नेना बड़ अज्ञान

पढ़ि–लिखि हम बनब विद्वान

माय–बापक हम बढ़ाएब मान

राखब मिथिला माटिक आन

ज्येष्ठ–श्रेष्ठ केर राखब मान

पैर छूबि हम करब प्रणाम

गुरुक आदर सदति करब हम

बिनु आदर नहिं पाएब ज्ञान

बाबा–बाबी छथि अनमोल

सिखबथि सभखन मिठ–मिठ बोल

कक्का–काकी आओर बेजोड़

स्कूल पठबथि भोरे–भोर

दीदी–पीसा हमर बड़ नीक

लेमनचूस आनथि बड़ मीठ

बनिकऽ बौआ हम होशियार

छोट बहिनकें करब दुलार

नाना–नानी करथि दुलार

खेल–कूद केर करथि जोगाड़

मौसा–मौसी कहथि पिहानी

मोन पड़ैत अछि घो–घो रानी

मास्टरजी पढ़बैत छथि खाँत

मोन राखी हम सभटा पाँति

पढ़ि–लिखि हम बनब गुणवान

भारत मायक बढ़ाएब शान



75

जानकी दैया जगत तारिणी

जन–गण मोनक पीड़ हारिणी

सकल जगत जननी मृगनयनी

नुकबथि नोर अपन तल पीपनी

बुच्ची सोचथि मोने–मोन

माए बजै छथि कियेक अनोन

सीता माता शक्ति प्रतीक

बदलि दितथि जगतक सभ रीति

अबला बनि नहिं सहितथि पीड़

सीता राजक राखितथि नींव

माय–माय सुनू तर्कक बात

घर–घर पूजित काली मातु

मन मन्दिर छवि राखु जोगाय

अनुशरण करू काली माय

76

ठुमकि–ठुमकि बौआ चलल बजार

कीनिकऽ अनलन्हि मोटरकार

कार चढ़ि बौआ गेला ससुरारि

सासुमायक छूलन्हि पएर

पुछलन्हि कुशल कहू परिवार

बौआ बजलैन्ह हृदय बिचारि

कनिञा बिनु आब किछु ने सोहाइ

करू विदाई शुभ–शगुन उचारि

जीवन पथ चलू डेग सम्हारि

जीविका केर किछु करिअ जोगाड़

कठिन श्रमे लक्ष्मी घर आओतीह

हृदयांगन गम–गम–गमकौतीह

77

पानि पढ़ौलहुँ, तेल पढ़ौलहुँ

मंत्र फूकि कऽ जन्तर बन्हलहुँ

बौआक कानब बढ़ले जाइ

करब आब हम कोन उपाय

दिन बेरागन डाली पठौलियै

तंत्र– मंत्र सेहो करबौलियै

निहुछि दीप हम नजरि उतारल

राई, जमाइन संग मिर्च जराओल

बड़का भैया आनल बजाए

मूल मंत्र किछु देलन्हि सुनाय

करू शीघ्र किछु आओर उपाय

डाक्दर लऽग जा जाँच कराउ

सुनितहिं बौआ मुँह मुस्काओल

माएक सोझमतिपन पर रीझल

जोड़ा मास्क आनि पहिराउ

दुष्ट कोरोना दूर भगाउ

दू गज दूरी राखू बनाय

मूल मंत्र दियौ सभकेँ सिखाय

साबुन पानि संग करू इयारी

व्यर्थक जुनि छाँटू बुधियारी



78

आब ने गाबय निनियाँ नानी

साँझ पराती बिसरल बाबी

गीत–नाद केर कहू की खेरहा

गाबय अछि सभ असगर बिरहा

बौआ केर अछि मोन बिधुआयल

कहू जमाना केहन आयल

निज भाषा पढ़ि बनब सुजान

बूढ़ पुरानक राखब मान



79

भुटबा बौआ बड़ बदमाश

बदमाशी मे सभ सँ खास

सूतथि ने ओ कलमच कखनो

पानि पियाबथि सभ कैँ अखने

पुरलन्हि मात्र महीना तीन

देखबथि दिनहि तरेगन गिनि

मालिशमे जँ होन्हि अबेर

तम्मा नहिं ओ मानथि फेर

स्नेह, दुलार आओर मनुहार

हुनका नहिं कोनो दरकार

नानी तेलक माली ला

ईलसन–कीलसन गीत सुना

80

सुनू यौ बौआ एक पिहानी

एहिमे अचरज भारी छैक

मेघ कतहु धरती छैक कत्तहु

अजगुत प्रेम कहानी छैक

प्यासल व्यथित देखि धरती कैँ

रिमझिम जल बरसाबैत छैक

शून्य सपाट धरती पर बहुविधि

लता पुष्प गमकाबैत छैक

हरियर–हरियर गाछ वृक्ष पर

मिठ–मिठ फर लुबधाबैत छैक

गाछ छैक तैँ बाँचल धरती

पर्यावरण सुरक्षित छैक

हमरो सभ केर बाँचल जीवन

अटल सत्य बड़ भारी छै

गाछ ने काटी कखनहुँ बौआ

ई अपराध बड़ भारी छैक

82

खिस्सा कह गे नानी

तखन भरिहैं पानि

पानिओ भेलै कारी

बढ़लै खूब बीमारी

आब की पीयब शीतल पेय

आनि कियो नहिं देथुन्ह गे

शीतल पेयमे छैक बड़ दोष

सरिपहुँ तोहर उड़तौ होश

फेर सँ नानी पोखैर खुना

पोखरिक भीड़ पर गाछ लगा

बरखा बरिसत झम– झम– झम

बौआ नाचय छम– छम– छम

83

जल बरसै छैक मेघ सँ एतेक

कहू कतय सँ लाबैत छैक

कोनो कुबेरक पैघ खजाना

नील गगनमे गाड़ल छैक

सूनू यौ बौआ सभटा गाथा

मेल–जोलक सभ माया छैक

परोपकार हित कार्य करी मिलि

एहिमे आनन्दक आभा छैक

बादल भैया जल बरिसाबए

जीव–जन्तु सभ तृप्ति पाबए

धरतीक कोखि तृप्त करैत पुनि

समुद्रक अंक समा जाइ छैक

सूर्यक ताप सोखि–सोखि पुनि

अंबर तक पहुँचाबैत छैक

वाष्परूप शीतलता पबिते

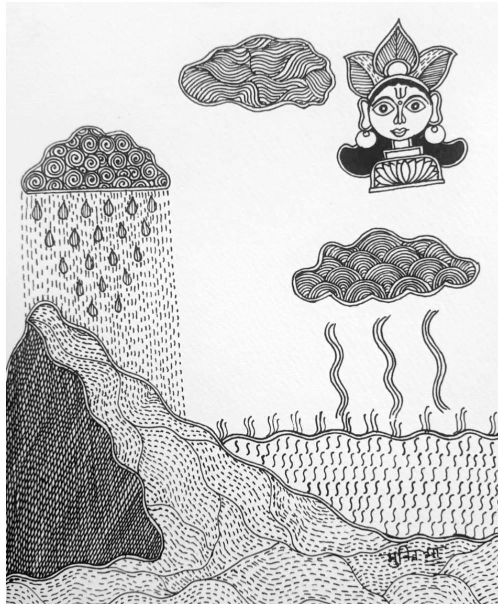
बादल नव बनाबैत छैक

जल भंडार नहिं घटय कहियो

रहय प्रकृति सदति समतूल

नाम एकर जलचक्र कहाबै

लीला अजब प्रकृतिक मूल



84

बौआ यौ बौआ खेल खेलाउ

अटकन, मटकन खेल खेलाउ

खेल मोबाइलक होइछ खराप

दैत छैक बड़का आघात

झिझ्झिर कोना,चोरा–नुक्की

ती–ती,खो खो, घो–घो रानी

चोर–सिपाही, गुल्ली डंडा

पिट्टो, कैरम,लूडो,चिक्का

चत्कबड्डी खूब खेलाउ

सभटा आलस दूर भगाउ

सभटा खेल छैक सेहतमंद

खेलि पायब अद्भुत आनन्द

सेहत सेहो रहत दुरुस्त

रोग ब्याधि सभ होयत पस्त

85

सूगा बजैछ देखू मिठ–मिठ बोल

चकमक चमकय लाल, लाल लोल

कौआकेँ देखियौ छै कारी लोल

सदिखन बाजय कर्कश बोल

बाजू यौ बौआ मिठ–मिठ बोल

अहूँकेँ चमकत लाल–लाल ठोर

बोले छैक दुनियाँमे सभसँ अमोल

बाजब नहिं कखनो कबकब बोल

मिठ–मिठ बोलीसँ जीतब जहान

ओलसन बोल करत हलकान

86

कहथि वैद्यजी सुनियौ बात

साँझ प्रात नित माँजू दाँत

दाँत मीत थिक धरू सम्हारि

स्वादक सँग आनन्द अपार

उत्तम चिड़चिड़ी मध्यम भैंठ

भेटि जाय जँ साहोर, सिक्कैठ

आमून, जामून, नीम, खजूर

सखुआ, बखुआ, खैर, बबूर

जएह पाबि दाँत माँजू जरूर

नोन तेल दए घसब मसूर

चमकत दाँत जँ स्वस्थ मसूर

छिटकत बिजुरी बिहुँसत ठोर